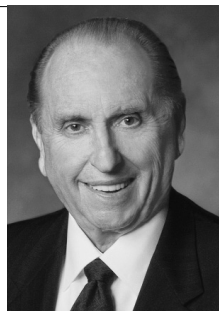

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन द्वारा

अध्यक्ष मॉनसन का साहसी होने के लिए बुलाहट

कम से कम एक घण्टा तो बिता,अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन ने ध्यान दिया,परन्तु हमें क्यों बुलाया गया है किसी एक तरह या अन्य तरह से चुनाव करने को ।

बुद्धिमता से चुनाव करना, उन्होंने सलाह दी, हमें साहस की आवश्यकता है—"नहीं बोलने का साहस, हां बोलने का साहस । परिणाम ही मंज़िल निर्धारित करते हैं ।"[1]

निम्नलिखित उद्धरणों में,अध्यक्ष मॉनसन अतिम दिनों के संतों को स्मरण कराते हैं कि उन्हें सच्चाई और नेकता के लिये साहसी होकर खड़े होना है,उस के लिए जिस पर वे विश्वास करते हैं,और एक संसार का सामना करते हुए जिसने अनन्त मुल्यों और सिंद्धातों को नाकार दिया है ।

"साहसी होने की बुलाहट हम में से प्रत्येक के लिए लगातार आती रहती है," वह बोले थे । "यह ऐसी ही थी, और हमेशा ऐसी ही रहेगी ।"[2]

साहसी होना परमेश्वर की स्वीकृति लाता है

"हम सभी भय का सामना करेंगे, बुरा अनुभव, और विपक्ष का सामना करेंगे । चले हम–हम सभी–के पास सर्वसम्मति से, सिंद्धातों के लिए साहसी होकर खड़े रहने की चुनौती है । साहस, कोई समझौता नहीं, परमेश्वर की अनुमति की मुस्कुराहट लाता है । साहसी बनकर जीना और एक आर्कषित सदगुण है जब इसका सम्मान करते है ऐसे नहीं जैसे इच्छुक होकर मरना है परन्तु निश्चेय शालीनता से जीना भी है । जैसे हम आगे बढ़ते हुए, जीने का प्रयत्न करते है वैसे जैसे हमें जीना चाहिये,हमें अवश्य ही प्रभु की ओर से सहायता मिलेंगी और उसके शब्दों में चैन पा सकते है ।"[3]

साहस के साथ खड़े होना

"सहना इस का क्या अर्थ है ? मुझे इस की परिभाषा प्रिय हैः साहस के साथ खड़े होना । साहसी होना आपके विश्वास के लिए जरुरी हो सकता है, इस की समय-समय पर आवश्यकता होगी जैसे कि आप पालन करते हैं । इसकी जरुर ही आवश्यकता पड़ सकेगी जैसे जब तक आप सहेते रहेंगे उस दिन तक जब आप इस नाशवर के अस्तित्व से जाएंगे ।"[4]

सच्चाई के लिए साहसता से खड़े होना

"आप [शायद] सच्चाई और नेकता के लिए ढ़ढ़ता से खड़े हो सकते है । क्योंकि आजकल के समाज का रवैय है प्रभु के हमें दिए हुए सिंद्धातों और मुल्यों से दूर रहना का, आप को वास्तव में उससे बचने के लिए बुलाया जाएंगा उसपर जिसपर आप विश्वास करते हैं । तबतक जब तक आप के गवाही ढ़ढ़ न हो, आप को उन के लिए जो आप के विश्वास को चुनौती देते हैं के लिए खड़े होना यह कठिन होगा । जब ढ़ढ़ता से होगी, आपकी सुसमाचार, उद्धारकर्ता की गवाही, और हमारे स्वर्गीय पिता जो कुछ आप करते है अपने जीवन भर में प्रभावित होंगे । "[5]

हमें आत्मिक और आचरण में साहस की जरुरत है

"टेलिविजन पर, मूविओ में ,और अन्य मीडिया में [आजकल] अक्सर सीधे सीधे विरोधी संदेश चित्रित किये जाते हैं जिससे हम अपने बच्चों को आलिंगन कर और पकड़कर रखना चाहते हैं । यह ही उन्हें आत्मा और सिंद्धातों में रहना सीखाना ही हमारी जिम्मेदारी नहीं होती है परन्तु उस में उसी तरह से स्थिर रहने में मदद करना भी होता है, इस के बावजूद बाहरी शक्तियां जिस से वे झलते हैं । इस में हमारी तरफ से अधिक समय और परिश्रम की आवश्यकता होगी–और दूसरों की सहायता करने के आदेश में, हमें हमारे आत्मिक और आचरण में बुराई के विरोध हम जिसको हर तरफ देखते है खड़े रहने की आवश्यकता है ।"[6]

क्या हम कभी भी साहसी हुए है

"जैसे हम रोज़ दर रोज़ जीने के विषय की ओर जाते हैं, यह लगभग

अनिवार्य होता जाता है कि हमारे विश्वास को चुनौती मिले सके । काई दफा हम अपने आपको दूसरो से घिरा और पक्षपत में खड़े पाते है या यहां तक क्या ग्रहण करने योग्य है और क्या नहीं है के विचार में अकेले खड़े होते हैं । ...

"क्या कभी भी हम जिसपर विश्वास करते है के लिए साहस और तैयारी के साथ खड़े हुए हैं, और यदि हम प्रक्रिया में, क्या हम इसे साहसी तौर पर,ज्ञान के ताकत द्वारा अकेले खड़े हो सकते है कि वास्तविक्ता में हम कभी भी अकेले नहीं होते है जब हम हमारे स्वर्ग में पिता के साथ खड़े होते हैं ।''[7]

टिपण्णी

1. थार्मस एस. मॉनसन, ''The Three Rs of Choice,'' लियाहोना, नव, 2010, 67, 68 ।
2. थार्मस एस. मॉनसन, ''The Call for Courage,'' लियाहोना, मई 2004, 55 ।
3. थार्मस एस. मॉनसन, ''Be Strong and of a Good Courage,'' लियाहोना, मई 2014, 69 ।
4. थार्मस एस. मॉनसन, ''Be Believe, Obey, and Endure,'' लियाहोना, मई 2012, 129 ।
5. थार्मस एस. मॉनसन, ''May You Have Courage,'' लियाहोना, मई 2009, 126 ।
6. थार्मस एस. मॉनसन, ''Three Goals to Guide You,'' लियाहोना, मई 2007,118– 19 ।
7. थार्मस एस. मॉनसन, ''Dare to Stand Alone,'' लियाहोना, मई 2011, 60, 67 ।

इस संदेश से शिक्षा

जिन्हें आप शिक्षा देते है को आगमी सप्ताह में — घर पर,काम पर, स्कूल पर,या गिरजा पर —स्थिति के बारे में विचार करने को पूछ सकते हैं– जिस में उन्हें साहस के साथ कार्य करने की आवश्यकता होगी । वे शायद भय का,अन्त तक किसी चुनौती का सामना करके, अपने विश्वास के लिये खड़े होकर, या सुसमाचार के सिंद्धातों का और अधिकता से पालन करने का निर्णाय लेकर कर सकते हैं ।

युवा

कोई और सारा

मैककेनजी मिलार द्वारा

मैं अक्सर इस प्रश्न के जवाब में अपने भरोसे का प्रयोग करने में कठिनाई पाती थी जैसे ''आप कॉफी क्युं नहीं पीती हैं ?'' अतीत में मैं बहानों के साथ आती थी ''यह बहुत कड़वी होती'' या ''मुझे इसका स्वाद पसन्द नहीं है ।''

मैं शार्मिन्दा क्युं हूं ? मैं क्युंकर भयभीत हूं उस पर जिस पर में विश्वास करती हूं ? पीछे मुड़कर देखो अब, मैं समझ नहीं पाई कि आखिर में भयभीत क्यो हूं । परन्तु, मैं सच में याद करती हूं जब मैंने बहानो के पीछे छुपना छोड़ दिया था ।

एक दिन मेरे हाई स्कूल में अग्रेजी की कक्षा में, शिक्षिका ने घोषणा की कि हम टी वी पर एक श्रृखांला देखेंगे मैं जानती थी मुझे नहीं देखनी चाहिए । जबकि दूसरे विधार्थी उत्साह से भरे थे, मेरी सहपाठी सारा ने हाथ खड़ा किया और पुछा कि वह जा सकती है ।

जब शिक्षिका ने पुछा क्युं, सारा ने मामले के अनुसार जवाब दिया था, ''क्योंकि मैं मॉरमन हूं और मैं निन्दा के साथ नहीं देख सकती हूं ।''

उस का कक्षा के समाने साहस से खड़े होना अदभूत था । सारा का धन्यवाद हो,मैं भी खड़ी हुई और बाहर साफ आत्मा के साथ चित्र का खत्म होने का इन्तजार किया था ।

मैं सदा के लिये बदल गई थी । मैंने अपने विश्वास को बताना शुरु कर दिया था बजाए बात दर किनारा करने के । और परिणाम स्वरुप, मैंने अपने आप में भरोसा पाया और गिरजा में और स्कुल गतिविधि में अधिक भाग लेने लगी थी ।

मैंने कभी भी सारा को नहीं बताया कि उसका उदाहरण मेरे लिए क्या मायने रखता है, परन्तु मैंने उसके भरोसे का उदाहरण की बराबरी करने की कोशिश की । मैं अब महसूस करती हूं कि अदभूत परमेश्वर के, पवित्र गिरजे के एक सदस्य होना सच में कुछ भी शर्म करने के लिए नहीं होता है । मैं आशा करती हूं कि मैं, अपने उदाहरण के द्वारा, कोई और सारा, बन सकती हूं ।

लेखिका युटाह, सयुक्त राष्ट्र, में रहती है ।

बच्चा

धर्मशास्त्रों में प्रोत्साहन

अध्यक्ष मॉनसन ने हमें सीखाया है साहसी रहने और जिस पर हम विश्वास करते है खड़े होने के लिए । धर्मशास्त्रों में यहां काई उदाहरण है जो साहसी होना दर्शाते हैं । प्रत्येक नाम के विपरित दिए धर्मशास्त्र को पढ़ें । कैसे यह लोग साहस को दर्शाते है और वे जो जानते है कि क्या सही है के लिए खड़े होते हैं ? आप अपने जवाबो को लिखकर या चित्र बन सकते हैं ।

दानियल (दानियल 6:7, 10–23)
एस्थर (एस्थर 4:5–14; 5:1–8; 7:1–6)
लामनाईटी शमुएल (इलामन 13:2–4; 16:1–7)
जोसफ स्मिथ(जोसफ स्मिथ–इतिहास 1:11–17)

© 2015 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमत्ति : 6/14 । अनुवाद अनुमत्ति : 6/14 । *First Presidency Message, April 2015* का अनुवाद । Hindi । 12584 294

यीशु मसीह की विशेषताएं : बिना किसी छलकपट या ठोंग के

प्रार्थनापूर्वक इस सामग्री का अध्ययन करें और खोचकर जाने कि क्या बांटना है । कैसे उद्धारकर्ता का जीवन और भूमिकाऐ आपको उसमें विश्वास को बढ़ने की समझ देगा और उनको आशीषित करेगा जिन का आप भेंट करने वाला शिक्षा संदेश द्वारा ख्याल करते है ? अधिक जानकारी के लिए, reliefsociety.lds.org पर जाएं ।

विश्वास, परिवार, सहायता

यह भाग यीशु मसीह के विशेषताएं को भेंट करने वाला शिक्षा संदेश की श्रृखांला में दर्शाता है ।

समझाएं कि यीशु मसीह बिना छलकपट और ठोंग के विश्वासी होने पर उसके उदाहरण का अनुसरण करने में हमारी मदद करेगा । एलडर जोसफ बी.वॉथलिन (1917-2008) बारह प्ररितों के परिषद के ने कहा थाः ''बहलाना या रास्ते से दूर ले जाना धोखा है । ... एक व्यक्ति बिना छलकपट के एक मासूम व्यक्ति होता है,सच्चे उद्देश्य,और शुद्ध प्रेरणाओं के, उसके जीवन की साधारण अभ्यास के प्रतिदिन की प्रक्रिया के सम्पूर्ण सिंद्धातो का प्रतिबिम्ब होने की पुष्टि करता है ।... मैं विश्वास करता हूं गिरजे के सदस्यों की जरुरतों के लिए बिना छलकपट के जो अभी अधिक अत्यावश्यक हो सकता है अन्य दूसरे समयों के क्योंकि बहुत से है संसार में जो इस शुद्धता के महत्वता को समझते हो ।''[1]

ठोंगी का, अध्यक्ष टियटर एफ.उक्टोंफ, प्रथम अध्यक्षता में दितीये सलाहकार, ने कहाः ''हम में से कोई भी मसीह की तरह नहीं है जैसे की हम जानते है हमें होना चाहिये । परन्तु अति इच्छुक होते हैं अपनी गलतीयों और गुनाह के प्रवृति से उभरने में । अपने हृदय और आत्मा के साथ हम यीशु मसीह के प्रायश्चित के सहायता के साथ बेहतर बनने को तरसते है ।''[2]

हम जानते हैं ''हमें हमारे काम, हमारे हृदयों के कामनाएं, और किस तरह के इन्सान हम बनेंगे के अनुसार जांचा जाएंगा ।''[3] अब तक हम पश्चाताप करने का प्रयत्न करते हैं, हम शुद्ध बनते जाएगें —"और धन्य है वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे " (मत्ती 5:8) ।

अतिरिक्त धर्मशास्त्र

भजन सहिंता 32:2; याकूब 3:17;
1 पतरस 2:1–2, 22

धर्मशास्त्रों से

छोटे बच्चे बिना ठोंग के होते हैं । यीशु मसीह ने कहा : ''बालको को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है । ... और उसने उन्हें गोद में ले लिया,और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी'' (मरकुस 10:14, 16) ।

मसीह का अमेरिका में क्रुस पर चढ़ाएं जाने के बाद बच्चों की सेवा भी की थी । उसने लोगों को बच्चों को उसके पास लाने का आदेश दिया था और छोटे बच्चों को लाकर उसके आसपास बैठा दिया और यीशु उनके मध्य खड़ा हुआः...

"... और तब वह रोया,और भीड़ उसकी साक्षी हुई, उसने उनके एक एक छोटे बच्चे को लेकर आर्शीवाद दिया और पिता से उनके लिए प्रार्थना की । ...

"और जब उन्होंने देखना चाहा तब अपनी आंखों को स्वर्ग की ओर किया,और स्वर्गो को खुलते हुए और स्वर्गदूतों को मानो अग्नि के मध्य ,से उतरते हुए देखा, और उन्होंने उतर कर उन छोटे बच्चों को घेर लिया,और वे ज्वाला से घिर गए, और स्वर्गदूतो ने उनको उपदेश दिए'' (3 नेफी 17:12, 21, 24) ।

टिपण्णी

1. Joseph B. Wirthlin, "Without Guile," Ensign, May 1988, 80, 81.
2. Dieter F. Uchtdorf, "Come, Join with Us," Liahona, Nov. 2013, 23.
3. Handbook 2: Administering the Church (2010), 1.2.1.

इसपर विचार करें

बिना ठोगीं बने रहने से छोटे बच्चों से हम क्या सीख सकते हैं? (See Guide to the Scriptures, "Guile.")

© 2015 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/14 । अनुवाद अनुमतिः 6/14 । *Visiting Teaching Message, April 2015* का अनुवाद । Hindi । 12584 294